ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 100-101

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

परम्परा और आधुनिकीकरण का सम्बन्ध

कंचन वर्मा
शेध अध्येत्री– एम0ए0 एम0फिल0, समाज शास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

सारांश : ग्रामीण क्षेत्रों की सबसे बड़ी विशेषता उसकी परम्परागत व्यवस्था थी, किन्तु अब वहाँ भी आधुनिकता ने अपने पैर फैलाना शुरू कर दिया है। या पुरानी परम्पराओं में परिवर्तन लाना प्रारम्भ कर दिया है।

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषता, परम्परागत, व्यवस्था, आधुनिकता, पुरानी परम्पराओं, परिवर्तन ।

परम्परा– शाब्दिक अर्थ में परम्परा से अभिप्राय एक ऐसे मानवीय प्रथा, विश्वास, संस्था या मनोवृति से है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांरित की जाती है। परम्पराओं की मदद से समाज लोगों का आचरण निर्धारित होता है। परम्परा एक किस्म की सामाजिक विरासत है जिसे समाज के विभिन्न लोग एक लंबे समय से निर्मित करते है। परम्पराएं साधारणतया मैखिक होती है और जब हम परम्पराओं का आचार–संहिता का रूप देते है, तो वह सामाजिक कानून का स्वरूप ले लेती है। एन्थनी गिडेन्स(1998) को कहना है कि आज परम्परागत समाज उन्नीसवीं सदीं के अन्त होते–होते इस दुनिया से समाप्त हो गया। इस बात से यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि वर्तमान समाज में परम्पराओं की पूरी तरह समाप्ति हो गयी। परम्पराएं इतनी जल्दी–जल्दी समाप्त नहीं होती है। परम्पराएं और आधुनिकता दोनों साथ–साथ चलती है।

परम्पराओं की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है–

1– परम्परा समाज के सदस्यों के व्यवहारों का नियंत्रक है।

2– परम्पराएं सामाजिक विरासत है, इनके निर्माण समस्त समाज की भूमिका होती है। एक–दो व्यक्ति आपस में मिलकर परम्पराओं का निर्माण नहीं कर सकते है।

3– परम्परा का स्वरूप अमूर्त होता है, लेकिन इसका प्रभाव सामाजिक जीवन में देखा या महसूस किया जा सकता है।

4– परम्पराएं अभौतिक संस्कृति है किन्तु इन पर आधारित जिन चीजों का निर्माण होता है उनका स्वरूप भौतिक भी हो सकता है, जैसे– धार्मिक मूर्ति, मन्दिर इत्यादि।

5– परम्पराओं में विकास और परिवर्तन दोनों ही धीरे– धीरे होते हैं। आज समाज में अनेक ऐसी परम्पराएं है, जो हजारों सालों से चली आ रही है समाज में परम्पराएं स्वत समय के साथ बनती और बिगड़ती रहती है।

आधुनिकता– 'आधुनिक' शब्द अंग्रजी भाषा के 'मार्डन' शब्द का हिन्दी अनुवाद है, जिसका अर्थ है प्रचलन या फैशन जो भी समकालीन है, अर्थात जिसका वर्तमान समय में प्रचलन है, वहीं आधुनिक है, चाहे वह अच्छा है अथवा बुरा। डेनियल लर्नर(1968) के अुनसार–आधुनिकता, प्रगति उन्नति की ओर सम्पन्नता तथा अनूकूलन की तात्पर्यता से संबंधित मन की आकाक्षांओं की एक अवस्था ही है। डेनियल लर्नर न आधुनिकता का पश्चिमी मॉडल प्रस्तुत करते हुए इसके पाँच प्रमुख लक्षण बताये है।

1– बढ़ता हुआ नगरीकरण।

2– बढ़ती हई साक्षरता।

3– साक्षरता में वृद्वि के साथ– साथ समाचार पत्रों, पुस्तकों, रेडियों इत्यादि संदेशवाहन के विभिन्न साधनों के द्वारा पढ़े– लिखे व्यक्तियों का परस्पर अर्थपूर्ण विचार विमश।

4– इससे क्षमताओं में बृद्धि तथा मानवीय शक्ति का निर्माण।

5– राजनितिक जीवन का विकास।

आधुनिकता के अन्तर्गत हम अपनी परम्पराओं में पूरा लचीलापन लाने को तैयार है। हम बड़ी उदारता से आधुनिक उपभोग की वस्तुओं को अपना रहे है। बढ़ते हुए उपभोग के पीछ आधुनिकता के कारक है। आवागमन की सुविधाओं तथा संचार साधनों की बृद्वि ने आम आदमी के उपभोग की वस्तुओं, पसन्दगी और स्वाद में सजातीयता लायी हैं। आदमी, औरत और बच्चा के पोषाक के उपभोग भी बदल गई है। स्त्रियों की पोशाक में यह सजातीयता बहुत बढ़ गई है। सलवार –कमीज जो पहले केवल पंजाबी स्त्रियों की पोशाक थी अब सारे देश की स्त्रियों की पोशाक हो गई है। पिछले दिनों में कांतिर्ब सामग्री की व्यापकता इतनी बढ़ी है कि अब गावों में ब्यूटी पार्लर खुल गई है। उपभोक्तावाद के विकास में बाजार की भूमिका सबसे अधिक है। एक स्थानीय बाजार में जो दूरदराज के किसी गॉव में है, दुनिया भर के आईटम मिल जाते है। इस सामान्य और सहज उपलब्धता ने उपभोग को तीव्रता प्रदान की है और इसी कारण बढ़ते हुए उपभोग को आधुनिकता का विशिष्ट लक्षण माना जाता है। जब आधुनिकता आती

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

है। तब इसके साथ प्रौद्यौगिकी पूँजीवॉद और प्रजातंत्र भी आते है। ये प्रक्रियाएं बहुत शक्तिशाली होती है। परिणाम स्वरुप समाज में कई परिवर्तन आते है। कभी–कभी परम्परा और आधुनिकता के अनुकूलन में रुकावट आ जाती है जैसे पुरानी चीजें छोड़ नही पाते और नई चीज गले नही उतरती लेकिन इस तरह का ब्रेक–डाउन लम्बे समय तक नही चलता और परम्परा तथा आधुनिकता में अनुकूलन हो जाता है। कुछ परम्पराओं ने आधुनिक अर्थो को ग्रहण कर लिया है, जैसे–तीर्थ यात्रा करने से मुक्ति मिलेगी, साथ ही भ्रमण का आनन्द भी लिया जा सकेगा।

सारांश में, हम देखते है कि जब परम्पराएं आधुनिकता का आधार बन जाती है, तो आधुनिकता परम्पराओं को दृढ़ करने में सहायता भी पहुँचाती है। भारत में परम्परा और आधुनिकता के बीच अन्तर्क्रिया के संबन्ध में यह कहा जा सकता है कि ये दोनो परस्पर बिरोधी नही है, बल्कि एक दूसरे की पूरक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Sing Yogendra- Modernization of Indian Tra dition, Rawat Publications Jaypur, 1994.
2. Sing Yogendra- Culture Change in India Rawat Publication Jaipur, 2000.
3. Dube, S. C. - The study of complex culture in Unnithan et.al (Eds), Toward a Sociology of Culture in India Practice- Hall of India, New Delhi, 1965 P.P. 421-423.
4. Giddens, Anthony - Sociology, Polity Press, Cambridge, 1998.

*****